पाठ ५ आखिरी चट्टान तक

पाठ का सारांश

लेखक कन्याकुमारी पहुँचकर समुद्र के बीच स्थित चट्टानों को देखता है। वह एक चट्टान पर खड़े होकर चारों ओर फैले अथाह जल और लहरों की शक्ति को महसूस करता है। उस दृश्य को देखते हुए वह इतना खो जाता है कि अपनी पहचान तक भूल जाता है।

इसके बाद लेखक सूर्यास्त देखने के लिए 'सैंड हिल' (रेत के टीले) की ओर जाता है। वह एक-एक टीला पार करता हुआ अंततः उस स्थान तक पहुँचता है जहाँ से सूर्यास्त का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है। सूर्य धीरे-धीरे समुद्र में डूबता है और आकाश के रंग बदलते रहते हैं—सुनहरे से लाल, फिर बैंगनी और अंत में काले। यह दृश्य लेखक के मन में रोमांच, विस्मय और हल्की उदासी भर देता है।

सूर्यास्त के बाद अँधेरा होने लगता है और लेखक को वापस लौटने की चिंता होती है। समुद्र का पानी बढ़ रहा होता है, लहरें तेज हो जाती हैं और रास्ता कठिन हो जाता है। लेखक साहस और समझदारी से तट के रास्ते वापस लौटता है।

अगली सुबह वह 'विवेकानंद चट्टान' पर जाता है। वहाँ से वह सूर्योदय का मनमोहक दृश्य देखता है। साथ ही वह स्थानीय लोगों के जीवन, उनकी बेरोजगारी और संघर्ष के बारे में भी जानता है।

कहानी का संदेश:-

- प्रकृति हमें आत्मिक शांति और आत्मज्ञान देती है।
- जीवन में कठिन परिस्थितियों का सामना साहस और धैर्य से करना चाहिए।
- यात्राएँ केवल स्थान देखने के लिए नहीं होतीं, बल्कि वे हमें जीवन को समझने का अवसर देती हैं।

शब्दार्थ:

- स्याह/सियाह — काला, श्याम
- चट्टान — शिला
- समाधिस्थ/समाधि — समाधि में स्थित, मनोयोग, तपस्या
- चेतना — बुद्धि-विवेक से काम लेना, सावधान होना, होश में आना
- क्षितिज — वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं, दृष्टि-सीमा
- सिहरन — कंपन, सिहरने की क्रिया
- विस्तार — फैलाव
- संगम — मिलने का स्थान (जैसे तीन समुद्रों का मिलन)
- प्रयत्न — कोशिश, प्रयास
- सार्थकता — सफलता या उद्देश्य पूरा होना
- अनुभूति — महसूस करना, एहसास
- संघर्ष — कठिनाई से लड़ना
- पृष्ठभूमि — पहले की बातें, पीछे की भूमि या पीछे का दृश्य
- झुरमुट — पास-पास उगे पेड़-पौधों का घना समूह।
- बीहड़ — ऊबड़-खाबड़, विकट, विभक्त

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

- मद्धिम — मध्यम, कम तीव्र, मंद
- महुआ/महुवा — उपयोगी फूल-फल वाला वृक्ष, जिसकी लकड़ी ईंधन व निर्माण में काम आती है।
- सीपियाँ — शंख-घोंघे की जाति का जलचर; दोहरे खोल में रहता है, कुछ में मोती बनता है
- दार्शनिक — दर्शनशास्त्र का जानकार, तत्ववेत्ता
- ओट — आड़, रोक, शरण; परदे के लिए बनी दीवार
- अर्घ्य — पूजनीय, पूजा में अर्पित की जाने वाली वस्तु
- कडल-काक — पक्षियों की एक प्रजाति
- बाइनाक्युलर (Binoculars) — दूरबीन, द्विनेत्री
- सैंड हिल (Sand Hill) — बालू का टीला
- सुरमई — हल्का नीला, सुरमे के रंग का
- सिर धुनना — शोक/पश्चाताप में सिर पीटना, पछताना
- बे-लाग — खरा, दो-टूक (स्पष्ट) बात

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. लेखक ने सूर्यास्त का मनोहारी दृश्य कहाँ से देखा?

   (क) विवेकानंद चट्टान से

   (ख) अरब सागर की ओर के ऊँचे टीले से

   (ग) पच्छिमी क्षितिज से

   (घ) सैंड हिल से

   उत्तर: (घ) सैंड हिल से

   कारण: पाठ में स्पष्ट है कि लेखक रेत के टीले (सैंड हिल) पर चढ़कर सूर्यास्त का सुंदर दृश्य देखता है। वहीं से उसे पूरा दृश्य स्पष्ट दिखाई देता है।

2. "मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं ही हूँ" यह कथन लेखक की किस मन:स्थिति को दर्शाता है?

   (क) मौन हो जाना

   (ख) विस्मित हो जाना

   (ग) भ्रमित हो जाना

   (घ) आशंकित होना

   उत्तर: (ख) विस्मित हो जाना

   कारण: प्रकृति के अद्भुत सौंदर्य को देखकर लेखक इतना प्रभावित हो जाता है कि स्वयं को ही भूल जाता है। यह उसकी गहरी आश्चर्य और विस्मय की स्थिति को दर्शाता है।

3. "मैंने, सिर्फ मैंने उस चोटी को पहली बार सर किया हो।" इस कथन में कौन-सा भाव व्यक्त होता है?

   (क) करुणा

   (ख) विनम्रता

   (ग) आत्मीयता

   (घ) संतुष्टि

   उत्तर: (घ) संतुष्टि

   कारण: चोटी पर पहुँचकर लेखक को सफलता का अनुभव हुआ, जिससे उसे खुशी और संतोष मिला।

4. "शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति" वाक्य में वर्णन है—

   (क) बलखाती लहरों का

   (ख) सागर की व्यापकता का

   (ग) सूर्यास्त के दृश्य का

   (घ) पच्छिमी क्षितिज का

   उत्तर: (ख) सागर की व्यापकता का

   कारण: इस वाक्य में समुद्र की असीम शक्ति और उसके विशाल विस्तार का वर्णन किया गया है।

5. लेखक की कन्याकुमारी की यात्रा का वर्णन पढ़कर कहा जा सकता है कि—

   (क) यह कन्याकुमारी के मौसम को प्रमुखता से वर्णित करता है।

   (ख) यह यात्रा को जीवंत अनुभूतियों से जोड़ता है।

   (ग) यह केवल यात्रा के रोमांच पर केंद्रित है।

   (घ) इसमें कन्याकुमारी का काल्पनिक वर्णन मिलता है।

   उत्तर: (ख) यह यात्रा को जीवंत अनुभूतियों से जोड़ता है।

   कारण: लेखक ने केवल स्थान का वर्णन नहीं किया, बल्कि अपनी भावनाओं, अनुभवों और प्रकृति से जुड़ी अनुभूतियों को भी व्यक्त किया है, जिससे यात्रा जीवंत बन जाती है।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. यात्रियों का समूह सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए सैंड हिल की ओर बढ़ता जा रहा था लेकिन लेखक सैंड हिल पर पहुँचकर कुछ देर रुकने के बाद दूसरे टीले की ओर बढ़ने लगा। उसके ऐसा करने के पीछे मूल कारण क्या था?

   उत्तर: लेखक के सैंड हिल से आगे बढ़ने का मुख्य कारण उनकी जिज्ञासा और पूर्णता की खोज थी। सैंड हिल से सूर्यास्त का दृश्य तो दिख रहा था, लेकिन अरब सागर की ओर एक ऊँचा टीला उस दृश्य के कुछ हिस्से को ओट (आड़) में लिए

हुए था। लेखक चाहते थे कि वे सूर्यास्त को बिना किसी बाधा के पूरे विस्तार के साथ देखें। इसी 'खुले विस्तार' को पाने की चाह में वे एक के बाद एक कई टीले पार करते चले गए।

2. लेखक ने कन्याकुमारी के स्थानीय लोगों के विषय में क्या-क्या बताया?

   उत्तर: लेखक ने स्थानीय लोगों, विशेषकर शिक्षित युवाओं के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें बताई हैं:

   - बेरोजगारी: कन्याकुमारी की लगभग आठ हजार की आबादी में चार-पाँच सौ शिक्षित नवयुवक बेकार थे।
   - दिनचर्या: वे युवा अक्सर नौकरियों के लिए अर्जी देने या दार्शनिक सिद्धांतों पर बहस करने में समय बिताते थे।
   - जीविकोपार्जन: कुछ युवा फोटो-एल्बम, शंख या मालाएँ बेचकर अपना गुजारा करते थे।
   - संघर्षपूर्ण जीवन: वे सीपियों का गूदा खाकर भी 'विवेकानंद चट्टान' से प्रेरणा लेकर अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे।

3. “अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया” इस पंक्ति में ‘प्रयत्न की सार्थकता’ से क्या अभिप्राय है?

   उत्तर: यहाँ 'प्रयत्न की सार्थकता' का अर्थ है अपने लक्ष्य की प्राप्ति से होने वाला संतोष। लेखक एक के बाद एक रेत के टीले इस उम्मीद में चढ़ रहे थे कि उन्हें क्षितिज का सबसे साफ़ और विस्तृत दृश्य दिखाई दे। जब अंततः वे सबसे ऊँचे टीले पर पहुँचे और उनके सामने समुद्र का अनंत विस्तार और डूबता सूरज पूरी भव्यता के साथ प्रकट हुआ, तो उन्हें लगा कि उनकी थकान और मेहनत सफल हो गई है।

4. यात्रा-वृत्तांत में आए उन दृश्यों के विषय में लिखिए जिनका अनुभव लेखक के लिए बिल्कुल नया था।

   उत्तर: लेखक के लिए निम्नलिखित अनुभव बिल्कुल नए और रोमांचक थे:

   - त्रिवेणी संगम: तीन समुद्रों (अरब सागर, हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी) का मिलन स्थल और उस पर स्थित विवेकानंद चट्टान का समाधिस्थ रूप।
   - रंगीन रेत: तट पर मिलने वाली अनाम रंगों की रेत (सुरमई, लाल, पीली, काली), जिसमें एक-एक इंच पर रंग बदल रहे थे।
   - बदलते रंगों का सूर्यास्त: सूर्य का डूबते समय सोने से लहू (लाल) और फिर बैजनी से काला पड़ जाना।
   - मल्लाहों की अनोखी नाव: रबड़ के पेड़ के तीन तनों को जोड़कर बनाई गई नाव पर बैठकर समुद्र की लहरों के बीच से गुजरना।

5. यात्रा-वृत्तांत से ऐसे दो अंश चुनकर लिखिए जिससे लेखक की मानसिक दृढ़ता और हार न मानने की प्रवृत्ति का पता चलता है।

   उत्तर:

   - अंश 1: "टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था। हर अगले टीले पर पहुँचने पर लगता कि शायद अब एक ही टीला और है..." (यह उनकी शारीरिक थकान के बावजूद आगे बढ़ने की इच्छाशक्ति को दर्शाता है)।
   - अंश 2: जब लेखक समुद्र तट पर बढ़ते पानी और अंधेरे के बीच फँस गए थे, तब वे घबराने के बजाय चट्टानों की नोकों पर पैर रखकर और दौड़कर सुरक्षित स्थान तक पहुँचे। उनका रेत पर फिसलकर नीचे उतरना और विपरीत परिस्थितियों में रास्ता खोजना उनकी मानसिक दृढ़ता का प्रमाण है।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

विद्या से संवाद

यात्रा का वृत्तांत

मोहन राकेश का 'आखरी चट्टान तक' यात्रा-वृत्तांत केवल स्थान-चित्रण नहीं है बल्कि इसमें प्रकृति का सजीव रूपांकन, मानव-जीवन और समाज की झलक तथा आत्मानुभूति का गहरा समन्वय मिलता है।

नीचे यात्रा-वृत्तांत के प्रमुख तत्वों/विशेषताओं को कुछ प्रमुख बिंदुओं के माध्यम से दर्शाया गया है। इन्हें पढ़कर यात्रा-वृत्तांत की रचना-प्रक्रिया को समझने का प्रयास कीजिए। अपनी किसी यात्रा को इन बिंदुओं के माध्यम से समझाइए।

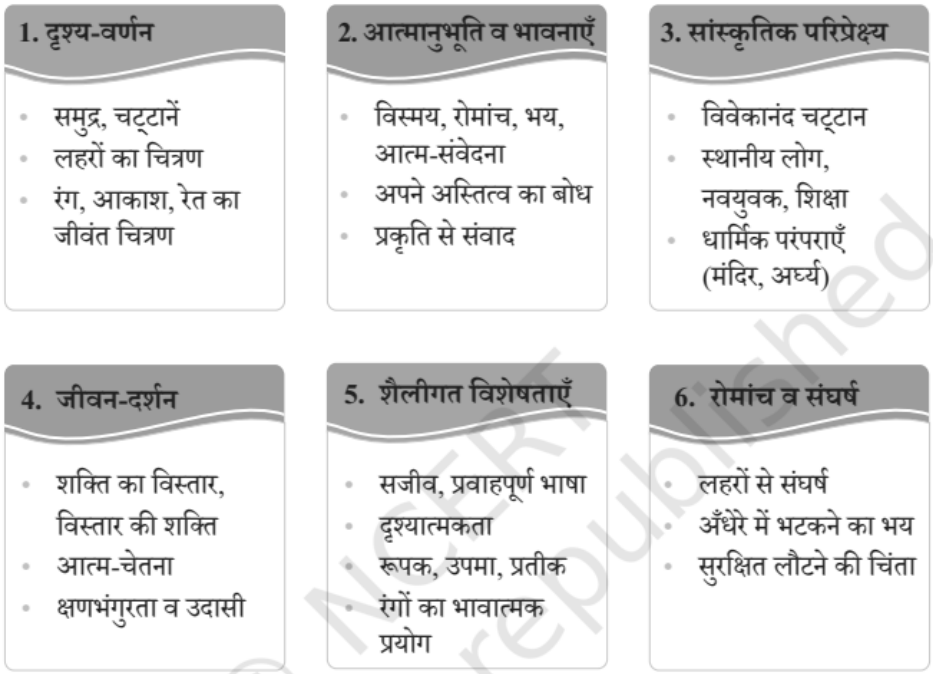

उत्तर: मेरी यात्रा —

उदयपुर की सैर

मैंने अपने परिवार के साथ उदयपुर की यात्रा की। यह यात्रा मेरे लिए बहुत यादगार रही। नीचे दिए गए बिंदुओं के आधार पर मैं अपने अनुभव साझा कर रहा/रही हूँ—

1. दृश्य-वर्णन :- उदयपुर झीलों का शहर है। यहाँ की पिचोला झील, पहाड़ियाँ और महल बहुत सुंदर लगे। पानी में महलों की परछाई मन को मोह लेती थी। सूर्यास्त के समय आकाश के बदलते रंगों ने दृश्य को और भी आकर्षक बना दिया।
2. आत्मानुभूति के भाव :- इस यात्रा के दौरान मुझे बहुत रोमांच और खुशी महसूस हुई। झील के किनारे बैठकर मुझे शांति का अनुभव हुआ। प्रकृति के साथ समय बिताने से मन प्रसन्न और हल्का हो गया।
3. सांस्कृतिक परिदृश्य :- उदयपुर की संस्कृति और परंपराएँ बहुत समृद्ध हैं। वहाँ के लोग सरल और अतिथि-प्रिय हैं। मैंने स्थानीय बाजारों में पारंपरिक वस्त्र और हस्तशिल्प देखे, जो बहुत आकर्षक थे।
4. जीवन-दर्शन :- इस यात्रा से मैंने सीखा कि प्रकृति के साथ समय बिताने से मन को शांति और नई ऊर्जा मिलती है। जीवन में व्यस्तता के बीच ऐसे अनुभव बहुत जरूरी होते हैं।
5. शैलीगत विशेषताएँ :- मैंने इस यात्रा को सरल और सजीव शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास किया है, ताकि पढ़ने वाला भी उन दृश्यों को महसूस कर सके।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

6. रोमांच व संघर्ष :- नाव की सवारी के दौरान हल्की लहरों ने थोड़ा डर भी पैदा किया, लेकिन वह अनुभव रोमांचक था। भीड़ और गर्मी के बावजूद हमने यात्रा का पूरा आनंद लिया।

निष्कर्ष :- यह यात्रा मेरे लिए केवल घूमने का अनुभव नहीं थी, बल्कि इसने मुझे प्रकृति, संस्कृति और जीवन के महत्व को समझने का अवसर दिया।

विषयों से संवाद

यात्रा और खोज

संसार में बहुत से लोगों ने लंबी-लंबी यात्राएँ की हैं और अपनी यात्रा से अर्जित ज्ञान और अनुभव से समाज को समृद्ध किया है। पुस्तकालय एवं शिक्षक की सहायता से कुछ महत्वपूर्ण यात्रा-वृत्तांत और उनके लेखकों के विषय में जानकारी एकत्रित कीजिए और लिखिए। आपकी सहायता के लिए एक संकेत नीचे दिया गया है।

यात्रा-वृत्तांत	स्थान	रचनाकार
किन्नर देश में	हिमाचल प्रदेश में स्थित किन्नौर	राहुल सांकृत्यायन

उत्तर: यात्रा और खोज

संसार में अनेक महान यात्रियों और लेखकों ने अपनी यात्राओं के अनुभवों को यात्रा-वृत्तांत के रूप में प्रस्तुत किया है। इनके लेखन से हमें नए स्थानों, संस्कृतियों और जीवन-शैली के बारे में जानकारी मिलती है। कुछ प्रमुख यात्रा-वृत्तांत और उनके रचनाकार निम्नलिखित हैं—

यात्रा-वृत्तांत	स्थान	रचनाकार
- किन्नर देश में	- हिमाचल प्रदेश के किन्नौर क्षेत्र	- राहुल सांकृत्यायन
- आखिरी चट्टान तक	- कन्याकुमारी	- मोहन राकेश
- तिब्बत में सवा वर्ष	- तिब्बत	- राहुल सांकृत्यायन
- अरे यायावर रहेगा याद	- विभिन्न स्थान	- अज्ञेय
- एक बूँद सहसा उछली	- विभिन्न यात्रा अनुभव	- अज्ञेय

मेरे देश की धरती

कन्याकुमारी भारत के तमिलनाडु राज्य में स्थित एक तटीय शहर है जिसके प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण पाठ में हुआ है।

1. भारत के समुद्री तट पर स्थित अन्य राज्यों के नाम तथा उनकी अवस्थिति को भारत के मानचित्र पर चिह्नित कीजिए।

   उत्तर: भारत के समुद्री तट पर स्थित प्रमुख राज्य इस प्रकार हैं—

   - गुजरात (पश्चिमी तट)
   - महाराष्ट्र (पश्चिमी तट)
   - गोवा (पश्चिमी तट)
   - कर्नाटक (पश्चिमी तट)
   - केरल (पश्चिमी तट)
   - तमिलनाडु (दक्षिणी/पूर्वी तट)
   - आंध्र प्रदेश (पूर्वी तट)
   - ओडिशा (पूर्वी तट)
   - पश्चिम बंगाल (पूर्वी तट)

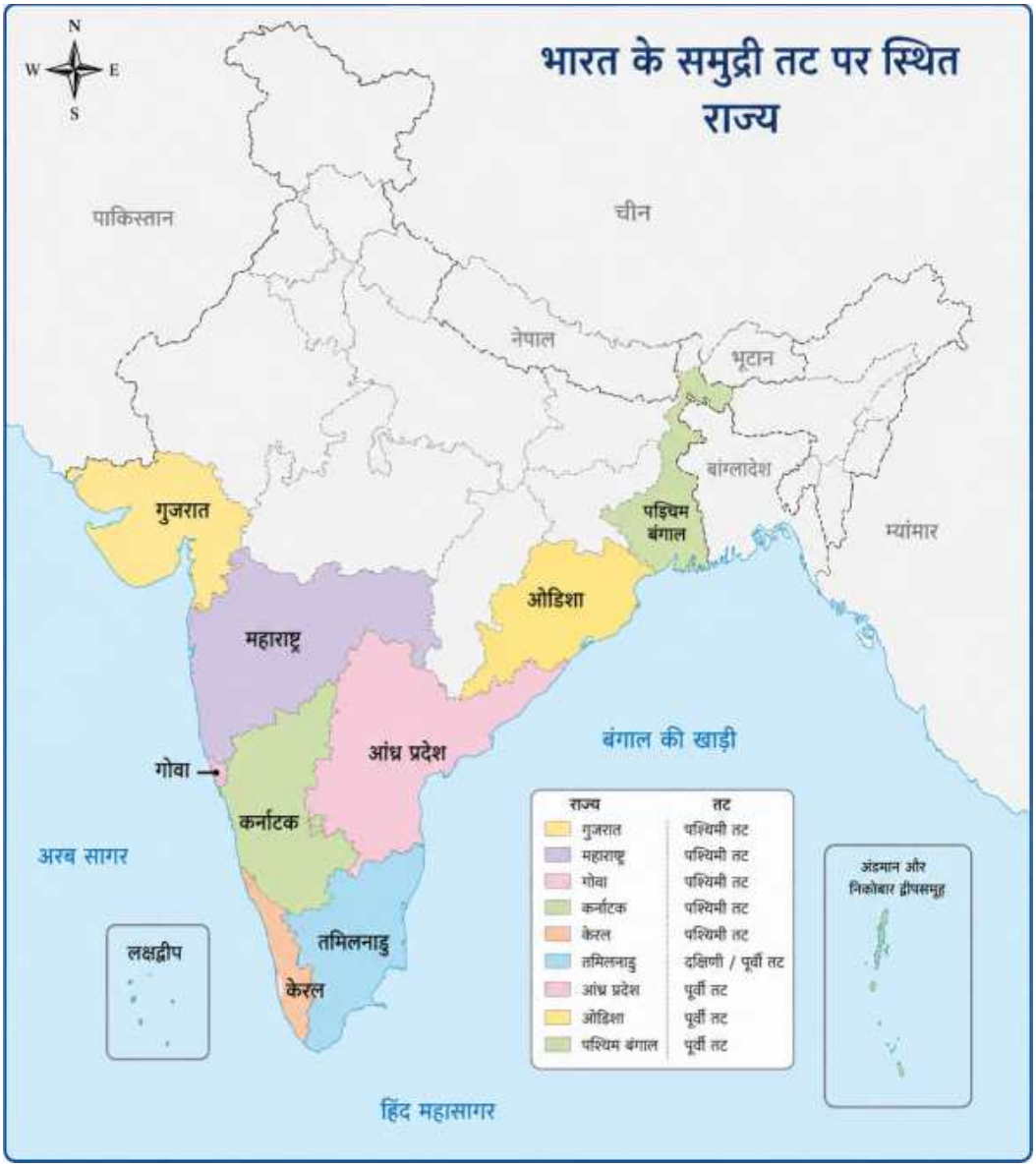

2. यात्रा करना सभी को अच्छा लगता है। आपके मन में भी कुछ जगहों को देखने की इच्छा अवश्य हुई होगी। अपनी पसंद की उन जगहों की सूची नीचे दिए गए शीर्षकों के अनुसार बनाइए।

पर्यटन स्थल	राज्य जहाँ वह स्थित है	पर्वतीय/समुद्री/ मैदानी/अन्य क्षेत्र	जलवायु	घूमने का अनुकूल समय

उत्तर: मेरी पसंद के पर्यटन स्थल—

पर्यटन स्थल	राज्य	क्षेत्र का प्रकार	जलवायु
• मनाली	हिमाचल प्रदेश	पर्वतीय	- ठंडी
• गोवा	गोवा	समुद्री	- गर्म व आर्द्र
• जयपुर	राजस्थान	मैदानी	- गर्म व शुष्क
• ऊटी	तमिलनाडु	पर्वतीय	- ठंडी व सुहावनी
• वाराणसी	उत्तर प्रदेश	मैदानी	- गर्म व समशीतोष्ण

3. कन्याकुमारी की भौगोलिक स्थिति, परिवेश, महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल एवं जन-जीवन का वर्णन करते हुए बताइए कि वहाँ की स्थिति आपके राज्य अथवा शहर/गाँव से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर: कन्याकुमारी भारत के दक्षिणी सिरे पर स्थित एक सुंदर तटीय शहर है। यहाँ अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर का संगम होता है।

- भौगोलिक स्थिति व परिवेश:
  - यह स्थान समुद्र से घिरा हुआ है। यहाँ चट्टानें, लहरें और विस्तृत जलराशि दिखाई देती है। सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों ही अत्यंत मनोहारी होते हैं।
- महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल:
  - विवेकानंद रॉक मेमोरियल: समुद्र के बीच स्थित वह चट्टान जहाँ स्वामी विवेकानंद ने समाधि ली थी।
  - कन्याकुमारी मंदिर: तट पर स्थित माता भगवती का प्राचीन मंदिर।
  - गांधी मंडपम: जहाँ महात्मा गांधी की अस्थियाँ विसर्जन से पूर्व रखी गई थीं।
  - तिरुवल्लुवर प्रतिमा: तमिल कवि और संत तिरुवल्लुवर की विशाल पत्थर की मूर्ति।
- जन-जीवन:
  - यहाँ के लोग मछली पकड़ने, पर्यटन और व्यापार से जुड़े हैं तथा उनकी संस्कृति दक्षिण भारतीय प्रभाव वाली है।
- भिन्नता (उदाहरण के लिए):
  - कन्याकुमारी उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों से काफी भिन्न है।
    - जलवायु: मैदानों में मौसम बहुत गर्म या ठंडा होता है, जबकि कन्याकुमारी में सालभर नम और संतुलित जलवायु रहती है।
    - दृश्य: मैदानी इलाकों में खेत या इमारतें दिखती हैं, जबकि यहाँ समुद्र और रेत के टीले प्रधान हैं।
    - भोजन: यहाँ नारियल और समुद्री भोजन अधिक मिलता है, जो मैदानी क्षेत्रों से भिन्न है।

क्षेत्र का प्रकार	मेरे क्षेत्र की विशेषता	कन्याकुमारी से भिन्नता
- पर्वतीय क्षेत्र (हिमाचल/उत्तराखंड)	- मेरा क्षेत्र पर्वतीय है; यहाँ पहाड़, घाटियाँ और ठंडी हवाएँ हैं; जलवायु ठंडी है	- कन्याकुमारी तटीय क्षेत्र है; वहाँ समुद्र और लहरें हैं; जलवायु गर्म और आर्द्र है
- ग्रामीण क्षेत्र (गाँव)	- मेरा क्षेत्र कृषि प्रधान है; यहाँ खेत, पशुपालन और खुला वातावरण है; जीवन शांत और सरल है	- कन्याकुमारी में पर्यटन और मछली-व्यवसाय प्रमुख हैं; समुद्र तट और चट्टानें हैं; पर्यटकों के कारण चहल-पहल रहती है
- महानगर (दिल्ली/मुंबई)	- मेरा क्षेत्र भीड़-भाड़ वाला है; ऊँची इमारतें, यातायात और प्रदूषण अधिक है; जीवन तेज़ और व्यस्त है	- कन्याकुमारी अपेक्षाकृत शांत तटीय क्षेत्र है; प्राकृतिक सौंदर्य और समुद्र का वातावरण है; जीवन सुकून भरा है

4. इस यात्रा-वृत्तांत में कन्याकुमारी में स्थित चट्टान को आखिरी चट्टान कहा गया है। पुस्तकालय या अन्य स्रोतों तथा समाज विज्ञान के अपने शिक्षक से बातचीत करके पता लगाइए कि वर्तमान समय में भारत का अंतिम छोर (दक्षिणतम बिंदु) किसे माना जाता है। उस स्थान के विषय में लिखिए।

   उत्तर: पाठ में कन्याकुमारी की चट्टान को 'आखिरी चट्टान' कहा गया है क्योंकि यह भारत की मुख्य भूमि (Mainland) का अंतिम छोर है। लेकिन यदि पूरे भारत (द्वीपों सहित) की बात करें, तो स्थिति इस प्रकार है:

   - इन्दिरा पॉइंट (Indira Point): वर्तमान में भारत का सबसे दक्षिणतम बिंदु 'इन्दिरा पॉइंट' माना जाता है।
   - अवस्थिति: यह अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के 'ग्रेट निकोबार' द्वीप पर स्थित है।
   - विशेषता: पहले इसे 'पगमैलियन पॉइंट' के नाम से जाना जाता था।
     - 1980 के दशक के मध्य में इसका नाम बदलकर भारत की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के सम्मान में 'इन्दिरा पॉइंट' रख दिया गया।
     - यह बिंदु भूमध्य रेखा (Equator) के बहुत करीब है।
     - 2004 की विनाशकारी सुनामी में इसका एक बड़ा हिस्सा जलमग्न हो गया था, लेकिन भौगोलिक रूप से यह आज भी भारत की सीमा का अंतिम दक्षिणतम बिंदु बना हुआ है।

5. इंटरनेट या अन्य किन्हीं माध्यमों से पता लगाइए कि आखिरी चट्टान में वर्णित कन्याकुमारी के विवेकानंद स्मारक चट्टान के स्वरूप में किस प्रकार का विस्तार हुआ है? (संकेत— तिरुवल्लुवर की प्रतिमा इत्यादि)

   उत्तर: मोहन राकेश ने जब यह यात्रा-वृत्तांत लिखा था, तब वहाँ स्मारक का स्वरूप उतना भव्य नहीं था। समय के साथ इसमें कई महत्वपूर्ण विस्तार हुए हैं:

   - तिरुवल्लुवर की प्रतिमा: विवेकानंद रॉक के ठीक बगल में एक और छोटी चट्टान पर तमिल संत-कवि तिरुवल्लुवर की 133 फुट ऊँची विशाल प्रतिमा स्थापित की गई है। यह प्रतिमा अब कन्याकुमारी की पहचान का एक अनिवार्य हिस्सा है।
   - स्मारक भवन: विवेकानंद रॉक पर अब एक भव्य 'विवेकानंद मंडपम' और 'श्रीपाद मंडपम' बना हुआ है, जहाँ लोग ध्यान और प्रार्थना करते हैं।
   - फेरी सेवा: यात्रियों की सुविधा के लिए आधुनिक और सुरक्षित नौका (फेरी) सेवा का विस्तार हुआ है, जो तट से चट्टान तक लगातार चलती रहती है।
   - पर्यटक सुविधाएँ: अब वहाँ रोशनी की आधुनिक व्यवस्था (लेजर शो), पीने के पानी और पर्यटकों के विश्राम के लिए बेहतर इंतजाम किए गए हैं।

हस्तशिल्प कौशल

“दो स्थानीय नवयुवतियाँ उन्हें अपनी टोकरियों से शंख-मालाएँ दिखला रही थीं।”

उपर्युक्त पंक्ति में स्थानीय युवतियों द्वारा यात्रियों को दिखाए जाने वाली शंख-मालाओं का उल्लेख है। यह भारतीय हस्तकला उद्योग के एक पारंपरिक रूप को दर्शाता है, जहाँ स्थानीय कारीगर घरेलू स्तर पर उत्पाद बनाते और बेचते हैं। शिक्षक की सहायता से हस्तकला और कुटीर उद्योग के विषय में जानकारी एकत्रित कीजिए।

1. किसी भी स्थानीय शिल्पकार से बात करके निम्नलिखित बिंदुओं पर जानकारी संगृहीत कीजिए। यह कार्य दो-दो के जोड़े में कीजिए—

   - शिल्प का नाम
   - यह कार्य कब से कर रहे हैं?
   - इसका प्रशिक्षण कहाँ से लिया?
   - शिल्प निर्माण में घर की महिलाओं की साझेदारी
   - प्रयुक्त सामग्री, तकनीक, लागत और विपणन
   - औपचारिक संस्थागत प्रशिक्षण

   उत्तर: स्थानीय शिल्पकार से प्राप्त जानकारी -

   - शिल्प का नाम: समुद्री सीपियों और शंखों से हस्तनिर्मित आभूषण (जैसे माला, कंगन आदि)।
   - कार्य का अनुभव: "मैं यह कार्य पिछले 15 वर्षों से कर रहा हूँ।"
   - प्रशिक्षण: "यह हमारा पुश्तैनी काम है। मैंने इसे अपने पिता और दादाजी को काम करते हुए देखकर सीखा है।"
   - महिलाओं की साझेदारी: "घर की महिलाएँ सीपियों की छँटाई करने, उन्हें साफ करने और मालाओं में धागा पिरोने का मुख्य कार्य करती हैं। उनके बिना यह काम संभव नहीं है।"
   - सामग्री, तकनीक और लागत:
     - सामग्री: विभिन्न प्रकार की सीपियाँ, नायलॉन का धागा, गोंद और पॉलिश।
     - तकनीक: सीपियों को घिसकर चिकना करना और हाथ से ड्रिल करके छेद करना।
     - लागत और विपणन: प्रति माला लागत ₹20-30 आती है, जिसे हम स्थानीय बाज़ारों या पर्यटकों को ₹50-100 में बेचते हैं।
   - संस्थागत प्रशिक्षण: "मैंने कोई औपचारिक कोर्स नहीं किया है, लेकिन अब सरकार द्वारा संचालित 'कौशल विकास केंद्र' हमारे जैसे कारीगरों को नई मशीनें चलाने का प्रशिक्षण दे रहे हैं।"

2. डिजिटल खरीदारी और ई-वाणिज्य कुटीर उद्योग को बढ़ावा देने में किस प्रकार उपयोगी है?

   उत्तर: डिजिटल क्रांति ने कुटीर उद्योगों का चेहरा बदल दिया है:

   - वैश्विक पहुँच: अब एक छोटा कारीगर अपने गाँव में बैठकर इंटरनेट के माध्यम से अपना सामान दूसरे देशों में भी बेच सकता है।
   - बिचौलियों का अंत: अमेज़न (Amazon Karigar) या फ्लिपकार्ट जैसी वेबसाइटों के माध्यम से कारीगर सीधे ग्राहक से जुड़ते हैं, जिससे उन्हें अपने उत्पाद का सही मूल्य मिलता है।
   - विज्ञापन के अवसर: सोशल मीडिया (Instagram/Facebook) पर अपने काम की तस्वीरें डालकर कारीगर मुफ्त में अपने ब्रांड का प्रचार कर सकते हैं।
   - डिजिटल भुगतान: यूपीआई (UPI) के कारण अब पैसों के लेन-देन में धोखाधड़ी का डर कम हो गया है और भुगतान तुरंत प्राप्त होता है।

3. हस्तशिल्प कला को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी इकट्ठा कीजिए और अपनी कक्षा में उस पर चर्चा कीजिए।

   उत्तर: भारत सरकार हस्तशिल्प को संरक्षित करने के लिए कई योजनाएँ चला रही है:

   - ओडीओपी (One District One Product - ODOP): इस योजना के तहत प्रत्येक जिले के एक विशिष्ट शिल्प को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का प्रयास किया जा रहा है।
   - मुद्रा योजना (PMMY): शिल्पकारों को अपना छोटा व्यवसाय शुरू करने या बढ़ाने के लिए बिना किसी गारंटी के सस्ता ऋण (Loan) उपलब्ध कराना।
   - हुनर हाट (Hunar Haat): अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय द्वारा आयोजित एक मंच, जहाँ देशभर के शिल्पकार अपने हुनर का प्रदर्शन और बिक्री करते हैं।
   - जीआई टैग (Geographical Indication Tag): किसी खास क्षेत्र के प्रसिद्ध हस्तशिल्प (जैसे बनारसी साड़ी या चंबा रूमाल) को कानूनी सुरक्षा देना ताकि उनकी नकल न हो सके।
   - समर्थ योजना (SAMARTH Scheme): कपड़ा मंत्रालय द्वारा कारीगरों को आधुनिक तकनीक और डिजाइन का प्रशिक्षण प्रदान करना।

मिलकर चलें

आपकी कक्षा में कुछ विशेष आवश्यकता वाले साथी भी होंगे जिन्हें अपने दैनिक जीवन में अनेक तरह की समस्याओं से जूझना पड़ता होगा।

1. ऐसे साथियों को अगर किसी यात्रा पर जाना हो तो उनके समक्ष किस प्रकार की चुनौतियाँ आ सकती हैं?
   उत्तर: यात्रा के दौरान विशेष आवश्यकता वाले साथियों की चुनौतियाँ

   - भौगोलिक बाधाएँ: व्हीलचेयर या चलने में दिक्कत होने पर सीढ़ियाँ, ऊबड़-खाबड़ रास्ते समस्या बनते हैं।
   - परिवहन की समस्या: बसों, ट्रेनों या नावों में दिव्यांगों के अनुकूल (Accessible) रैंप या सीटों का अभाव।
   - सूचना का अभाव: दृष्टिबाधित साथियों के लिए ब्रेल लिपि में जानकारी न होना या श्रवणबाधित साथियों के लिए साइन लैंग्वेज (सांकेतिक भाषा) गाइड की कमी।
   - सार्वजनिक सुविधाएँ: पर्यटन स्थलों पर सुलभ शौचालय (Accessible Toilets) और विश्राम कक्षों का न होना।
   - सामाजिक व्यवहार: लोगों की सहानुभूति की कमी या उन्हें अलग नज़रिए से देखना, जिससे उनका आत्मविश्वास कम हो सकता है।

2. उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कुछ ऐसे सुझाव दीजिए जो उनकी यात्रा को सहज बनाने में उपयोगी हों।

   उत्तर: इन चुनौतियों को कम करने के लिए हम निम्नलिखित उपाय कर सकते हैं:

   - बाधारहित बुनियादी ढाँचा (Universal Design): पर्यटन स्थलों पर सीढ़ियों के साथ-साथ रैंप और लिफ्ट की व्यवस्था होनी चाहिए।
   - तकनीकी सहायता: ऑडियो गाइड (दृष्टिबाधितों के लिए) और डिजिटल साइन बोर्ड का उपयोग करना।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

- विशेष परिवहन: ऐसी बसों या टैक्सियों का चयन करना जिनमें रैंप और व्हीलचेयर लॉक करने की सुविधा हो।
- पूर्व नियोजन (Planning): यात्रा पर जाने से पहले उस स्थान की सुलभता (Accessibility) की जाँच इंटरनेट या फोन के माध्यम से कर लेना।
- संवेदनशील साथी: कक्षा के अन्य साथियों को इस तरह प्रशिक्षित करना कि वे ज़रूरत पड़ने पर अपने विशेष मित्र की गरिमा बनाए रखते हुए सहायता कर सकें।

3. अपने द्वारा दिए गए सुझावों पर विद्यालय के विशेष शिक्षा शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए और समझिए कि आपके द्वारा सुझाए गए उपाय कितने प्रभावी हैं तथा उनमें और क्या बदलाव किए जा सकते हैं?

   उत्तर: जब आप अपने सुझावों पर शिक्षक से चर्चा करेंगे, तो वे आपको निम्नलिखित अतिरिक्त बिंदु समझा सकते हैं:

   - व्यक्तिगत सहायता (Individualized Support): हर बच्चे की ज़रूरत अलग होती है (जैसे ऑटिज़्म वाले बच्चे के लिए शांत जगह, शारीरिक दिव्यांग के लिए रैंप)।
   - सुरक्षा प्रोटोकॉल: यात्रा के दौरान आपातकालीन चिकित्सा किट और डॉक्टर का संपर्क नंबर साथ रखना अनिवार्य है।
   - प्रभावी बदलाव: शिक्षक बता सकते हैं कि केवल भौतिक सुविधाएँ ही काफी नहीं हैं, बल्कि 'सेंसर फ्रेंडली' वातावरण बनाना भी ज़रूरी है।

4. प्राप्त सुझावों के विषय में कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले साथियों से भी चर्चा कीजिए और उनकी राय जानने का प्रयास कीजिए।

   उत्तर: अपने साथियों से बात करते समय आपको उनकी वास्तविक भावनाओं का पता चलेगा। उनकी राय कुछ ऐसी हो सकती है:

   - "हमें केवल शारीरिक सहायता नहीं, बल्कि आप सबका साथ और सामान्य व्यवहार चाहिए।"
   - "हम चाहते हैं कि हम भी उन ऊँचे टीलों या चट्टानों तक पहुँच सकें, जहाँ आप जाते हैं; इसके लिए बस थोड़े से सहयोग की ज़रूरत है।"
   - "हमें उन जगहों पर ले जाएँ जहाँ भीड़ कम हो ताकि हम बिना किसी डर के यात्रा का आनंद ले सकें।"

सृजन

प्रकृति की ओर

क्या आपने कभी सूर्योदय और सूर्यास्त के समय का दृश्य देखा है? अगर नहीं तो एक दिन सुबह जल्दी उठकर उगते सूरज की लालिमा को देखिए और अस्त होते सूर्य के साथ शाम का भी आनंद लीजिए। अब इन दोनों दृश्यों की तुलना करते हुए अपने अनुभव का वर्णन कीजिए।

उत्तर: मैंने सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों के सुंदर दृश्य देखे हैं और दोनों का अनुभव बिल्कुल अलग लेकिन बहुत ही मनमोहक होता है।

- सूर्योदय का दृश्य: जब सुबह के शांत वातावरण में पूर्व की ओर क्षितिज पर लाली छाने लगती है, तो ऐसा लगता है जैसे प्रकृति धीरे-धीरे अपनी आँखें खोल रही हो। अंधकार को चीरकर जब सूरज की पहली किरण बाहर आती है, तो वह

केवल प्रकाश नहीं, बल्कि जीवन की नई उमंग लेकर आती है। ओस की बूंदों पर पड़ती सुनहरी किरणें मोतियों की तरह चमकने लगती हैं। यह दृश्य मन को अनुशासन और निरंतरता की सीख देता है।

- सूर्यास्त का दृश्य: सूर्यास्त का दृश्य भावुकता से भरा होता है। समुद्र के किनारे या पहाड़ों के पीछे सूरज को धीरे-धीरे डूबते देखना एक अद्भुत अनुभव है। जैसा कि पाठ 'आखरी चट्टान तक' में बताया गया है, सूर्य का गोला धीरे-धीरे पानी की सतह को छूता है और ऐसा लगता है जैसे पानी पर सोना ढुल आया हो। वह क्षण जब सूरज पूरी तरह ओझल हो जाता है और आसमान में बैजनी रंग की आभा फैल जाती है, मन को थोड़ा उदास लेकिन बहुत शांत कर देता है।
- तुलना: सूर्योदय हमें नई ऊर्जा, उत्साह और आशा देता है, जबकि सूर्यास्त हमें शांति, सुकून और विश्राम का अनुभव कराता है। एक दिन की शुरुआत का प्रतीक है, तो दूसरा दिन के अंत का।

अनुभव की साझेदारी

विधा से संवाद के अंतर्गत आपने दिए गए बिंदुओं के माध्यम से यात्रा-वृत्तांत के प्रमुख तत्वों के विषय में जाना और समझा। इन तत्वों को ध्यान में रखकर आप भी अपने घूमे हुए किसी प्रिय स्थान के अनुभवों पर एक यात्रा-संस्मरण लिखिए।
उत्तर: यात्रा-संस्मरण

मेरा प्रिय स्थान — माउंट आबू

पिछली गर्मियों में मैं अपने परिवार के साथ माउंट आबू गया/गई। यह राजस्थान का एकमात्र पर्वतीय स्थल है। वहाँ पहुँचते ही ठंडी हवा और हरियाली ने मन मोह लिया। चारों ओर पहाड़, घने पेड़ और शांत वातावरण था।

हम सबसे पहले नक्की झील गए, जहाँ नौका-विहार का आनंद लिया। झील का स्वच्छ पानी और उसके चारों ओर पहाड़ों का दृश्य बहुत सुंदर था। इसके बाद हमने दिलवाड़ा मंदिर देखा, जिसकी नक्काशी अद्भुत थी।

शाम को सनसेट प्वाइंट पर सूर्यास्त का दृश्य बेहद मनमोहक था। लाल-पीले रंगों से सजा आकाश और ठंडी हवा ने पूरे वातावरण को जादुई बना दिया।

इस यात्रा से मुझे प्रकृति के करीब आने, शांति का अनुभव करने और परिवार के साथ समय बिताने का अवसर मिला। यह यात्रा मेरे लिए हमेशा यादगार रहेगी।

चर्चा-परिचर्चा

- 'यात्राएँ हमें समृद्ध करती हैं' विषय पर कक्षा में एक परिचर्चा आयोजित कीजिए।

  उत्तर: इस विषय पर चर्चा करते समय आप निम्नलिखित तर्कों का उपयोग कर सकते हैं:

  - मानसिक विस्तार: यायात्राएँ हमें नई जगहों, प्रकृति और अनुभवों से परिचित कराकर हमारी सोच का विस्तार करती हैं।
  - सांस्कृतिक समझ: अलग-अलग स्थानों पर जाने से हमें वहाँ की भाषा, खान-पान, वेशभूषा और परंपराओं का पता चलता है। यह हमें विविधता का सम्मान करना सिखाती है।
  - धैर्य और अनुकूलनशीलता: यात्रा के दौरान चीज़ें हमेशा योजना के अनुसार नहीं होतीं। देरी, खराब मौसम या अनजान रास्ते हमें धैर्य रखना और नई परिस्थितियों में ढलना सिखाते हैं।
  - स्वयं की खोज: अकेले या समूह में यात्रा करते समय हम अपनी सीमाओं और अपनी शक्तियों को पहचानते हैं। जैसा कि लेखक ने महसूस किया— "शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति।"

- "'एक लहर मेरे पैरों को भिगो गई तो सहसा मुझे खतरे का एहसास हुआ।"

  यात्रा के दौरान कई बार ऐसी अप्रत्याशित चुनौतियाँ सामने आ जाती हैं। ऐसी किसी स्थिति का सामना करने के लिए व्यक्ति में किन गुणों का होना आवश्यक है? अपने सहपाठियों के साथ मिलकर इस विषय पर चर्चा कीजिए।

  उत्तर: लेखक जब समुद्र तट पर बढ़ते पानी और अंधेरे के बीच फँस गए थे, तो उस स्थिति से निकलने के लिए कुछ विशेष मानवीय गुणों की आवश्यकता थी। ऐसी किसी भी स्थिति के लिए व्यक्ति में ये गुण होने चाहिए:

  - उपस्थित बुद्धि (Presence of Mind): अचानक आए खतरे (जैसे ऊँची लहर) को देखकर घबराने के बजाय तुरंत सही निर्णय लेना।
  - साहस और निर्भीकता: जब लेखक ने देखा कि तट कम हो रहा है, तो वे डरे ज़रूर, पर रुके नहीं। उन्होंने दौड़कर और चट्टानों पर चढ़कर अपनी जान बचाई।
  - धैर्य (Patience): कठिन समय में आपा न खोना। घबराहट में अक्सर व्यक्ति गलत रास्ता चुन लेता है, इसलिए मन को शांत रखना ज़रूरी है।
  - आत्म-विश्वास: अपनी शारीरिक और मानसिक क्षमताओं पर भरोसा रखना कि "मैं इस परिस्थिति से बाहर निकल सकता हूँ।"
  - सावधानी: लेखक ने खतरा महसूस होते ही अपने जूते उतार लिए ताकि वे रेत और पानी में तेज़ी से दौड़ सकें। यह छोटी-छोटी सावधानियाँ बड़े खतरों को टाल देती हैं।

- यदि आपके पास भी कोई ऐसा अनुभव हो तो उसे अपने सहपाठियों के साथ साझा कीजिए।

  उत्तर: अनुभव साझा करना (उदाहरण)

  "एक बार जब मैं अपने परिवार के साथ पहाड़ियों पर ट्रेकिंग के लिए गया था, तो अचानक घना कोहरा छा गया। हमें सामने का रास्ता दिखना बंद हो गया और हम मुख्य रास्ते से थोड़ा भटक गए। उस समय हम सब बहुत डर गए थे, लेकिन हमने हार नहीं मानी। मेरे बड़े भाई ने धैर्य से काम लिया और मोबाइल के जीपीएस और पास के बहते झरने की आवाज़ का पीछा करते हुए हमें सुरक्षित स्थान तक पहुँचाया। उस दिन मैंने सीखा कि डरना स्वाभाविक है, लेकिन डर के आगे घुटने टेकने के बजाय दिमाग का इस्तेमाल करना ही असली बहादुरी है।"

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

क्रिया-विशेषण की पहचान और रेखांकन

"समुद्र में पानी बढ़ रहा था। तट की चौड़ाई धीरे-धीरे कम होती जा रही थी।"

उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित पद 'धीरे-धीरे' कम होना क्रिया की विशेषता बता रहा है। यहाँ कम होने की क्रिया धीमी गति से हो रही है।

जिस प्रकार संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द 'विशेषण' कहलाते हैं, उसी प्रकार क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द 'क्रिया-विशेषण' कहलाते हैं। इस वाक्य में 'धीरे-धीरे' पद व्याकरणिक दृष्टि से क्रिया-विशेषण है।

नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उनमें क्रिया-विशेषण पदों की पहचान कीजिए तथा दिए गए उदाहरण के अनुसार लिखिए।

वाक्य:

(क) बल खाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं।

(ख) यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ उस दिशा में जा रही थीं।

(ग) मैं देर तक भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा।

उदाहरण—

वाक्य	क्रिया-विशेषण	क्रिया, जिसकी विशेषता बताई जा रही है
मैं जल्दी-जल्दी चलने लगा।	जल्दी-जल्दी	'चलने लगा' क्रिया की विशेषता

उत्तर:

वाक्य	क्रिया-विशेषण	क्रिया, जिसकी विशेषता बताई जा रही है
(क) बल खाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं।	- बल खाती	- 'आती थीं'
(ख) यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ उस दिशा में जा रही थीं।	- कितनी ही	- 'जा रही थीं'
(ग) मैं देर तक भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा।	- देर तक	- 'देखता रहा'

आओ नए वाक्य बनाएँ

पाठ से चुनकर कुछ वाक्य नीचे तालिका में दिए गए हैं। इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों का अर्थ बताते हुए उनसे नए वाक्य बनाइए।

वाक्य:

1. तीनों तरफ से क्षितिज तक पानी-पानी था।
2. पीछे दाईं तरफ दूर-दूर हटकर नारियल के झुरमुट नजर आ रहे थे।

3. दूर तक एक रेत की लंबी ढलान थी।
4. पच्छिमी तट के साथ-साथ सूखी पहाड़ियों की एक श्रृंखला दूर तक चली गई थी।
5. सामने फैली रेत के कारण बहुत रूखी, बीहड़ और वीरान लग रही थी।

उत्तर:

1. तीनों तरफ से क्षितिज तक पानी-पानी था।

→ अर्थ: जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए प्रतीत होते हैं।

→ नया वाक्य: समुद्र के किनारे खड़े होकर क्षितिज का सुंदर दृश्य दिखाई देता है।

2. पीछे दाईं तरफ दूर-दूर हटकर नारियलों के झुरमुट नजर आ रहे थे।

→ अर्थ: पेड़ों का घना समूह।

→ नया वाक्य: बगीचे में आम के पेड़ों का झुरमुट बहुत घना है।

3. दूर तक एक रेती की लंबी ढलान थी।

→ अर्थ: नीचे की ओर झुका हुआ भाग।

→ नया वाक्य: पहाड़ी की ढलान पर बच्चे खेल रहे थे।

4. पश्चिमी तट के साथ-साथ सूखी पहाड़ियों की एक श्रृंखला दूर तक चली गई थी।

→ अर्थ: एक के बाद एक जुड़ी हुई चीजों की कतार।

→ नया वाक्य: पर्वतों की श्रृंखला बहुत सुंदर दिखाई देती है।

5. सामने फैली रेत के कारण जगह बहुत सूखी, वीरान और बेजान लग रही थी।

→ अर्थ: जहाँ कोई न हो, सुनसान स्थान।

→ नया वाक्य: रात के समय सड़क वीरान हो जाती है।

गतिविधियाँ

1. कल्पना कीजिए कि आप अपने परिवार के साथ कहीं घूमने गए हैं। वहाँ आपकी भेंट एक ऐसे यात्री से होती है जिसे आपकी सहायता की आवश्यकता है लेकिन आप दोनों एक-दूसरे की भाषा से अपरिचित हैं। ऐसे में उस अनजान यात्री की सहायता आप कैसे करेंगे?

   उत्तर: यदि मैं किसी ऐसे यात्री से मिलता हूँ जिसकी भाषा मुझे नहीं आती, तो मैं निम्नलिखित तरीकों से उसकी सहायता करने का प्रयास करूँगा:

   - सांकेतिक भाषा (Gestures): हाथों के इशारों और चेहरे के हाव-भाव का उपयोग करके बुनियादी बातें समझने की कोशिश करूँगा। जैसे— पानी पीने के लिए हाथ मुँह के पास ले जाना या रास्ता दिखाने के लिए दिशा की ओर इशारा करना।
   - चित्रों और मानचित्रों का प्रयोग: यदि यात्री के पास कोई मानचित्र है, तो मैं उसमें उँगली रखकर उसे सही स्थान समझा सकता हूँ। मैं कागज़ पर छोटे चित्र बनाकर भी अपनी बात कह सकता हूँ।

- अनुवाद तकनीक (Translation Tools): वर्तमान समय में स्मार्टफोन में 'गूगल ट्रांसलेट' (Google Translate) जैसे ऐप्स का उपयोग करके उसकी भाषा को अपनी भाषा में अनुवाद करूँगा और अपनी बात उसे समझाऊँगा।
- वैश्विक शब्दों का उपयोग: कुछ शब्द दुनिया भर में एक जैसे समझे जाते हैं, जैसे— "Help", "Water", "Doctor", "Station" या "Police"। इनका उपयोग मददगार साबित होगा।
- धैर्य और मुस्कुराहट: बिना घबराए और शांति से उसकी बात सुनने का प्रयास करूँगा। एक मित्रवत व्यवहार (Smile) सामने वाले का तनाव कम कर देता है, जिससे संवाद आसान हो जाता है।

2. पधारो म्हारे देश

अपने क्षेत्र के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों की एक सूची बनाइए और उनकी विशेषताओं को ध्यान में रखकर एक विवरणिका (ब्रॉशर) तैयार कीजिए।

उत्तर: पधारो म्हारे देश - राजस्थान पर्यटन

- प्रमुख पर्यटन स्थल और विशेषताएँ:
  - जयपुर (गुलाबी नगरी): यहाँ का 'हवा महल' और 'आमेर का किला' अपनी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध हैं। 'जंतर-मंतर' को विश्व धरोहर का दर्जा प्राप्त है।
  - उदयपुर (झीलों का शहर): 'पिछोला झील' के बीच बना 'सिटीज पैलेस' और 'जग मंदिर' दुनिया के सबसे सुंदर स्थानों में से एक हैं। इसे 'पूर्व का वेनिस' भी कहा जाता है।
  - जैसलमेर (स्वर्ण नगरी): यहाँ का 'सोनार किला' पीले पत्थरों से बना है जो सूरज की रोशनी में सोने जैसा चमकता है। यहाँ 'सैम सैंड ड्यून्स' में ऊँट की सवारी का आनंद लिया जा सकता है।
  - जोधपुर (नीली नगरी): 'मेहरानगढ़ किला' भारत के सबसे विशाल किलों में से एक है। यहाँ से पूरे शहर का नीला दृश्य मनमोहक लगता है।
- पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण:
  - व्यंजन: दाल-बाटी-चूरमा और गट्टे की सब्जी।
  - हस्तशिल्प: कठपुतली, ऊँट की खाल से बने जूते (मोजड़ी) और बंधेज की साड़ियाँ।
  - सांस्कृतिक कार्यक्रम: शाम को कालबेलिया नृत्य और लोक संगीत का आनंद।

भाषा संगम

"ऊँची-ऊँची लहरों से बचाते हुए मल्लाह नाव को ला रहे थे"

(नाव के विभिन्न भाषाओं में नाम: तोणि, नौका, दोणि, किश्ती, होड़ी, बेड़ी, बहड़ी, नाओ, नाव)

'नाव' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची आगे दी गई है।

नाव (हिंदी); नौ, नौका (संस्कृत); बेड़ी (पंजाबी); किश्ती, नाव (उर्दू); नाव (कश्मीरी); बेड़ी, किश्ती (सिंधी); होड़ी, नाव (मराठी); नाव, होडी (गुजराती); बहड़ी (कोंकणी); नाउ, नौका, डुङ्गा (नेपाली); नाओ, नौका (बांग्ला); नाओ

(असमिया); हि (मणिपुरी); नौका, नाआ (ओड़िआ); पडव, नाव (तेलुगु); ओडम् (तमिल); तोणि (मलयालम); दोणि (कन्नड़)।

इनके अतिरिक्त यदि आप 'नाव' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।

उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

उत्तर: भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में दी गई भाषाओं के अलावा, 'नाव' के लिए कुछ अन्य भाषाओं और बोलियों में प्रचलित शब्द इस प्रकार हैं:

- अरबी: सफ़ीना (Safeena) या ज़ौराक (Zawraq)
- फ़ारसी: कश्ती (Kashti)
- अंग्रेज़ी: बोट (Boat) या शिप (Ship - बड़े जहाज़ के लिए)
- मैथिली: नाओ (Nao)
- भोजपुरी: नाओ (Nao)
- स्पैनिश: बार्को (Barco)
- फ्रेंच: बतो (Bateau)

वाक्य: "ऊँची-ऊँची लहरों से बचाते हुए मल्लाह नाव को ला रहे थे"

यहाँ इस वाक्य का कुछ प्रमुख भारतीय भाषाओं में अनुवाद दिया गया है (आप अपनी मातृभाषा के अनुसार इनमें से चुन सकते हैं):

- संस्कृत: "उच्चतरङ्गैः रक्षन्तः नाविकः नौकां आनयन्ति स्म।"
- मराठी: "उंच लाटांपासून वाचवत नावाडी नाव आणत होते."
- गुजराती: "ઊંચા લાટાઓથી બચાવીને ખલાસીઓ હોડી લાવી રહ્યા હતા."
- पंजाबी: "ਉੱਚੀਆਂ ਲਹਿਰਾਂ ਤੋਂ ਬਚਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਮਲਾਹ ਬੇੜੀ ਨੂੰ ਲਿਆ ਰਹੇ ਸਨ।" (Uchiyan lahiran ton bachaunde hoye mallah beri nu liya rahe san.)
- बांग्ला: "উঁচু ঢেউ থেকে বাঁচিয়ে মাঝিরা নৌকা নিয়ে আসছিল।" (Unchu dheu theke bachiye majhira nouka niye aschilo.)
- मलयालम: "ഉയർന്ന തിരമാലകളിൽ നിന്ന് രക്ഷിച്ച് മാലാഖമാർ തോണി കൊണ്ടു വരികയായിരുന്നു." (Uyaranna thiramalakalil ninnu rakshichu malakhamar thoni kondu varikayayirunnu.)

झरोखे से

आपने 'आखरी चट्टान तक' रचना पढ़ी जो दक्षिण भारत की यात्रा पर आधारित है। आइए, अब पढ़ते हैं हिंदी के प्रसिद्ध रचनाकार निर्मल वर्मा का कुंभ मेले पर आधारित यात्रा-वृत्तांत का एक अंश—

प्रयाग : 1976

मुँह अँधेरे सीटी सुनाई देती है— घनी नींद में सुराख बनाती हुई। एक क्षण पता नहीं चलता, मैं कहाँ हूँ, किस जगह हूँ, कौन-सा समय है? आँखें खुलती हैं, तो ठेस-सा अँधेरा गटगट पीने लगती हैं, जैसे मुँह की प्यास आँखें बुझा रही हों। याद

आता है मेरे नीचे मेरा स्लीपिंग बैग है, मेरी यात्राओं और यातनाओं को ढोता हुआ। मैं जाग गया हूँ— लेकिन मेरी समूची देह गरमाई के घेरे में सो रही है।

कुछ देर बाद आँखें अँधेरे में टोहती हुई एक-एक चीज पर ठहर जाती हैं— किताब, तिपाई, लालटेन, फूस का अधखुला दरवाजा, हवा में सरसराती छत। बाहर एक फुसफुसाता हुआ शोर है— रेंगती हुई आवाज़ों का रेला— जैसे हजारों पैर रेत को थपथपाते हुए चल रहे हैं। मैं हड़बड़ाकर अपना स्लीपिंग बैग समेटता हूँ। हाथों में रेत, मिट्टी, फूस के पत्तों को ठेलता हुआ दरवाजा खोलता हूँ, तो ठिठका-सा रह जाता।

चाँद दिखाई देता है। पूर्णिमा का पूरा चाँद, इलाहाबाद के किले पर ऊँघता हुआ। पिछली रात उसे गंगा के भीतर देखा था— एक सफेद परछाई, एक झिलमिला-सा स्वप्न— अब समूची रात की यात्रा में थका हुआ वह किले के माथे पर चिपका था, एक गोल, सफेद, मुरझाई बिंदी जिसे सिर्फ एक अँगुली से पोंछा जा सकता था।

“आप जाग गए?”

सच्चे महाराज का चौकीदार मुझे देखकर कुछ हैरान-सा हो जाता है। दरअसल जब से मैं आया हूँ, वह मुझ पर हैरान है। वह उन्नीस-बीस वर्ष का युवक, जो शायद बचपन में ही आश्रम में बस गया था। मैं जहाँ कहीं भी होता हूँ, वह अपनी फैली फटी-फटी आँखों से मुझे निहारता है— मैं क्या हूँ, यह वह नहीं समझ पाता, न मैं तीर्थयात्री लगता हूँ, न कल्पवासी — मैं उसे आधा हिप्पी, आधा जिप्सी-सा दिखाई देता हूँगा— जो अपने पाप-पुण्यों को एक डफल बैग में समेटकर कुंभ मेले में भटकता है।

“आप भी संगम जाएँगे?”

उसने संदेह से मेरी ओर देखा।

“हाँ, इसीलिए आया हूँ” मैंने कहा। “यह सीटी कौन बजा रहा है?”

“पुलिस” उसने कहा। “यात्रियों को रास्ता दिखाना पड़ता है— बेचारे अँधेरे में भटक जाते हैं।”

दबी ठिठुरती आवाजें, भजन की कुछ पंक्तियाँ ठंडी रेत और भूरी चाँदनी पर उठती हैं, किसी बूढ़े स्नानार्थी का काँपता स्वर हवा में बहुत दूर तक रिरियाता रहता है। मैं पंप को ढूँढ़ता हुआ आश्रम का चक्कर लगाता हूँ। लगता है सब सो रहे हैं। हवा में खाली झोपड़ियों के दरवाजे सरसराते हैं, खुलते हैं, बंद हो जाते हैं। सब कुटियों से अलग सच्चे महाराज की यज्ञशाला दिखाई देती है— पीले फूल के मंडप, एक छत पर दूसरी छत— जैसे कोई जापानी पैगोड़ा चाँदनी में चमक रहा हो।

कुंभ मेले के वृत्तांत का यह अंश आपको रोचक लगा? अब इस यात्रा-वृत्तांत को इंटरनेट, पुस्तकालय से ढूँढ़कर पूरा पढ़िए।

उत्तर: हाँ, कुंभ मेले के इस यात्रा-वृत्तांत का अंश बहुत ही रोचक और प्रभावशाली लगा। इसमें लेखक निर्मल वर्मा ने प्रयाग के कुंभ मेले का वातावरण बहुत ही सजीव और सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।

लेखक ने मुँह अँधेरे का दृश्य, चारों ओर फैला अँधेरा, रेत, ठंडी हवा, लोगों की हलचल और संगम की ओर जाते यात्रियों का वर्णन इतने भावपूर्ण तरीके से किया है कि पाठक स्वयं को वहीं उपस्थित महसूस करता है। चाँदनी रात, फूस की झोपड़ियाँ, सीटी की आवाज़ और भजन गाते लोगों का चित्रण बहुत ही जीवंत है।

इस अंश को पढ़कर कुंभ मेले की विशालता, आध्यात्मिक वातावरण और लोगों की आस्था का पता चलता है। लेखक ने छोटे-छोटे विवरणों के माध्यम से पूरे वातावरण को हमारे सामने चित्र की तरह प्रस्तुत कर दिया है।

- आगे क्या करें
  - इस रोचक अंश को पढ़ने के बाद हमें पूरा यात्रा-वृत्तांत भी पढ़ना चाहिए। इसके लिए हम—
  - पुस्तकालय से संबंधित पुस्तक खोज सकते हैं।
  - इंटरनेट पर "प्रयाग : 1976 — निर्मल वर्मा" खोजकर पूरा लेख पढ़ सकते हैं।

खोजबीन

इस यात्रा-वृत्तांत में उल्लिखित 'आखरी चट्टान' को 'विवेकानंद चट्टान' के नाम से भी जाना जाता है। युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में विवेकानंद के जन्मदिवस 12 जनवरी को भारत में 'राष्ट्रीय युवा दिवस' तथा 'राष्ट्रीय युवा सप्ताह' के रूप में मनाया जाता है। राष्ट्रीय युवा सप्ताह के एक हिस्से के रूप में भारत सरकार द्वारा प्रत्येक वर्ष 'राष्ट्रीय युवा महोत्सव' का आयोजन किया जाता है। विवेकानंद के जीवन, लेखन और सामाजिक कार्यों के विषय में पुस्तकालय और इंटरनेट से खोजकर पढ़िए और कक्षा में चर्चा कीजिए। कुछ लिंक नीचे दिए गए हैं।

स्वामी विवेकानंद— युवाओं के लिए सच्चे आदर्श और मार्गदर्शक

https://haryanarajbhavan.gov.in/hi/publication/

स्वामी विवेकानंद— आध्यात्मिक वैज्ञानिक : प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार

https://www.pib.gov.in